मनमोहक डेज़ी मक्खियों को ठगती हैं

डेज़ी की एक दक्षिण अफ्रीकी प्रजाति के फूल अपना काम निकालने के लिए नर कीटों को लैंगिक समागम का धोखा देते हैं। ये नर कीट इन फूलों को मादा कीट समझकर उन पर मंडराते हैं और डेज़ी के पराग कणों को दूर-दूर तक पहुंचाने का काम करते हैं।

वैसे तो परागण क्रिया संपन्न करने में कीटों की मदद लेना पौधों की एक आम रणनीति है। कई फूलों में कीटों को आकर्षित करने के लिए मकरंद पैदा होता है जिसे पाने के लिए कीट इन पर बैठते हैं। जब कीट इन पर बैठते हैं तो मकरंद तो मिलता ही है, साथ में उनके शरीर पर फूल के पराग कण चिपक जाते हैं जो कीटों के साथ दूसरे फूलों तक पहुंचते हैं।

इस मामले में ऑर्किड्स एक विशेष रणनीति अपनाते हैं। उनके फूलों का रंग-रूप कुछ ऐसा होता है कि वे मादा कीट के समान दिखते हैं। नर कीट इन्हें सचमुच की मादा समझकर इन पर बैठते हैं और जाने-अनजाने परागण की क्रिया पूरी कर देते हैं। मगर अब स्टेलेनबॉश विश्वविद्यालय के एलन एलिस और क्वाज़ुलु नताल विश्वविद्यालय के स्टीव जॉनसन ने पता लगाया है कि एक डेज़ी (*गोर्ट्रिया डिफ्यूसा*) की पंखुड़ियां भी ऑर्किड्स के समान लैंगिक आकर्षण का फायदा उठाती हैं।

गोर्ट्रिया डिफ्यूसा नामक इस डेज़ी की पंखुड़ियों में बहुत विविधता पाई जाती है। कुछ फूलों की पंखुड़ियों पर ऐसी छाप होती है कि वह हूबहू किसी मादा कीट के समान दिखती है। एलिस व जॉनसन ने देखा कि नर बॉम्बीलीड

मक्खियां उन फूलों के साथ संभोग करने की कोशिश करती हैं जो मादा कीट के समान दिखती हैं। चित्र में सबसे ऊपरी पंक्ति के फूलों को देखें तो वे बिलकुल किसी कीट के समान दिखते हैं। दूसरी ओर, यदि फूल कीट के समान नहीं दिखता तो कीट उससे मकरंद पाकर हट जाते हैं।

अपने अवलोकनों के दौरान एलिस व जॉनसन ने यह भी देखा कि जो फूल सबसे ज़्यादा लैंगिक आकर्षण का भ्रम पैदा करते हैं, उनके पराग कण भी सबसे ज़्यादा दूरी तक फैलते हैं। यह भी देखा गया कि ऐसे नर मादा की तलाश में ज़्यादा फूलों पर जाते हैं और ये कहीं अधिक सक्रिय होते हैं। लिहाज़ा पराग कणों का फैलाव और भी ज़्यादा होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***